

दिलीप ओ सुदक्षिणर वशिष्ठश्रमे यत्रर वरुणर।

रघुवंशीय महरररर दिलीप पृथिवीर अधिपति हयेओ पुत्रहीन थरकरर जन्य अत्यन्त मरनसिक यन्त्रणर उपभोग करतेन। तरही पुत्रकामनरय प्रजरपति ब्रह्मरर अरुनर करे, धरुमपत्नी सुदक्षिणरके सङ्गी करे कुलगुरु वशिष्ठेर अश्रमेर दिके यत्रर करेन।

रररदम्पती मधुर ओ गम्भीर शब्दयुक्त रथे अहररण करे यथन यरक्षिलेन, तथन तरँदेर सोभर विद्युत ओ ँरररवतेर मत प्रतिभरत हक्षिल। अश्रमेर कोनर उपद्रव यरते नर घटे, सेजन्य स्वल्पसंथ्यक सैनके सङ्गे निलेओ, तरँदेर तेजः प्रभरवे बहसैन परिवृत बले वोध हक्षिल।

शलनिर्यरस ओ पुष्पररगेर गन्कयुक्त सुथस्पर्श पवन मृदुमन्द गतिते प्रवरहित हये येन रररदम्पतीर सेवा करररिल। तरँदेर रथचक्रेर गम्भीर मेघेर मत ध्वनि श्रवण करे, मयुरेरर षडजध्वनिर मत मनरहरर केकरध्वनि करते अररञ्ज करेररिल। पथेर पशे अभिनव अतिथि दरुशने विस्मयरविस्फररित नेत्रसम्पन्न मृगमिथुनेर चोथे, रररर ओ ररणी परस्परेर नेत्रसदृश्य रूँजे पेयेररिलेन। अकररश पथे शुभ्र बलरकरमरलर येन कलध्वनि सहकरे तौरण ररनर करे तरँदेर अभ्यरुथनर जनररक्षिल। रथ द्रुत धररित हलेओ अश्वरुरेर दररर उथित धुलि रररमहिषीर कुन्तल वर ररररर उष्णीष स्पर्श करते पारेनि, कररण पवन हिल अनुकुल ओ रथेर गति हिल प्रचओ वेगवन्।

গ্রামের নিকটবর্তী সরোবর সমূহে প্রস্ফুটিত পদ্মগুলি জলতরঙ্গে দোদুল্যমান হয়ে গন্ধবিতরণ করছিল। যাজ্ঞীক পুরোহিত অধ্যুষিত গ্রামগুলি যুপচিহ্ন শোভিত ছিল এবং সেখানকার যাজকেরা রাজাকে আশির্বাদের জন্য অর্ঘ নিয়ে পথের পাশে উপস্থিত হয়েছিলেন। গ্রামের গোপবৃদ্ধগণ রাজাকে উপহার রূপে প্রদানের জন্য সদ্য প্রস্তুত ঘৃত নিয়ে সমাগত হয়েছিলেন। রাজদম্পতী পথের পার্শ্ববর্তী অজ্ঞাতনামা বৃক্ষসমূহের পরিচয় তাঁদের কাছে জিজ্ঞাসা করেছিলেন। আশ্রমে গমনকারী রাজদম্পতীর বর্ণনা প্রসঙ্গে কবি বলেছেন-'চিত্রা নক্ষত্রযুক্ত পূর্ণিমায় হিমমুক্ত চন্দ্রমাকে যেরূপ অপূর্ব লাগে, তেমনি তাঁদের অপূর্ব লাগছিল'।